प्रगतिशील स्त्री विमर्श

डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. कामिनी वर्मा

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

प्रगतिशील स्त्री विमर्श

संस्करण : 2019
© सम्पादक
ISBN: 978-93-88998-43-7

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

10. महिला सशक्तिकरण और शैक्षिक नीतियाँ
–डॉ. शैलेश कुमार पाण्डेय

11. महिलायें और मानवाधिकार
–शशि प्रभा गौतम

12. भारतीय अर्थव्यवस्था में नारी उद्यम की भूमिका
–डॉ. धीरज कुमार गुप्ता

13. तीन तलाक, महिलाएं और मानवाधिकार
–डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय

14. भारत में महिला आरक्षण की राजनीति
–डॉ. देवेन्द्र नारायण सिंह

15. इक्कीसवीं सदी में विज्ञान, विकास और स्त्री
–प्रो. सविता भारद्वाज

16. महिला सशक्तिकरण : नवाचार एवं प्रयास
–डॉ. सुमन मौर्या

17. नई सहस्त्राब्दी की नारी : विशिष्ट उपलब्धियाँ
–डॉ. वन्दना कुमारी

18. नारीवादी राजनीतिक संघर्ष : एक मूल्यांकन
–डॉ. सीमा श्रीवास्तव

19. भारतीय नारी की यात्रा
–डॉ. राजकुमार पाठक

20. महिलाएं एवं राजनीतिक भागीदारी
–डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. रत्निका श्रीवास्तव

21. नारी के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह : बलात्कार
–डॉ. मनीषा

22. भारतीय समाज और स्त्री अस्मिता
–डॉ. रूपा सिंह

15

इक्कीसवीं सदी में विज्ञान, विकास और स्त्री

प्रति युग की कुछ नूतन स्थापनाएँ होती है। इक्कीसवीं सदी की मूलभूत उद्भावनाएँ है। इसकी पदचाप के साथ–साथ ग्लोबलाइजेशन, मेट्रो–कल्च–रिज्म, टेक्नो क्रेसी, नेटवर्क, मल्टी मीडिया, एम. एन.सी इंटरनेशनल मार्केट, कमोडिटी, मॉल, उपभोगवाद यन्त्रवाद, रोबोटिज्म, नगरीय आकृति ग्रहण करते मॉव यान्त्रिक विकास की तरफ बेतहाशा भागती जिन्दगी थी–जी, फोर–जी की गिनतियों के साथ–साथ ऊपर उठते मोबाइल टावरों का सन्जाल, सेलफोन कम्प्यूटर, इन्टरनेट, गूगल, स्काइपे, हाइप, फेसबुक वाट्सप के रूप में फैले हुआ संचार माध्यमों का ब्रह्माण्ड व्यापी विस्तार। आवागमन की कठिनाईयों श्रम और समय का बचाती परिवहन रेल, मेट्रो बुलेट ट्रेन यान इत्यादि सेवाएँ। इक्कीसवी सदी की परिउपलब्धियों ने मानव–जीवन को सुगम् विलासपूर्ण कोलाहल से रन्जित कर दिया है। यह सदी क्षण भर में दुनियाँ के किसी भी हिस्से से कनेक्ट हो सकती है। घर बैठे ही एक छोटे से सेल फोन के माध्यम से दुनियाँ के किसी भी हिस्से से कनेक्ट हो सकती है। घर बैठे ही एक छोटे से सेल फोन के माध्यम से दुनियाँ के किसी भी छोर से अपनी जरूरत का सामान मंगा सकती है। जो चाहे खरीद सकती है। जो चाहे घर बैठे–बैठे बेच डालती है। OLX पर कुछ भी बिकाऊ हैं। आज जो तकनीक उसके पास है वह कल और उन्नत होकर हाजिर होगी। यन्त्रवत्, सब यान्त्रिक मशीनो से घिरी इस सदी की साँसों में धीरे–धीरे ऑक्सीजन की मात्रा घटती जा रही है, कार्बनिक रसायनों का धुआँ इस पीढ़ी की साँसों में घुल रहा है। विशुद्ध जल की तलाश में बूँद–बूँद को तरसते लोग है।

वर्जन उपलब्ध है। [illegible]
अपनी–अपनी सामर्थ्य और [illegible]
में भी साइबर कैफे, मोबाइल [illegible]

यह तकनीकी के विस्तार का युग है। आधुनिक [illegible] में जग रही है। पश्चिमी परिधानों का प्रयोग बढ़ा है। [illegible] ओवेन, रेफ्रिजनेटरों ने जगह बना ली है। रेफ्रिजरेटर में [illegible] कर रखने, सब्जियों चुनकर रखने के बाद भी स्त्री व्यस्त है। [illegible] जुटा कर अपना दैनिक जीवन थोड़ा राहत और फुरसत भरी बनाने की [illegible] की है। पर काम के घन्टे लम्बे होते जा रहे है। [illegible] ने [illegible] दायित्वों का दायरा बढ़ा कर बैंक, बीमा, बिजली बिल, बच्चों के स्कूल अस्पताल हाट–बाजार, तक फैला दिया है। इतना ही नहीं नातेदारी निभाने के लिए भी उसको भेज कर पुरूष दफ्तर से आकर चैन की साँस लेता है। हाथ में टीवी का रिमोट लिए आश्वस्त बैठा है। विज्ञान तकनीकी के विकास ने स्त्री जीवन को कितना बदला है– यह प्रश्न महत्वपूर्ण तो है किन्तु इससे अधिक अहम यह जानना कि क्या इक्कीसवीं सदी के बर्बर विकास ने स्त्री की बुनियादी स्थिति को उन्नत किया है। तकनीकी विकास के द्वारा हुए बदलाव ऊपरी तौर पर लुभावन लगते है। तलछट में अभी भी अंधेरा है। धूल गर्द जमी हुयी है। उसको पोछ–पोछ कर साफ किए बिना स्त्री की वास्तविक स्थिति सुधरने की नहीं है। तकनीकी विकास सम्वेदना के धरातल पर हो। स्त्री के सन्दर्भ में सामाजिक सोच का दायरा विस्तृत होगा, उदार होगा। पुरूष सहधर्मी सहयोगी और साथी बन, उसके हौसलों को उड़ान देगा। उसको सुनेगा। उसके साथ सार्थक सम्वाद करेगा। इस सदी की चमत्कारी उपलब्धियों के बावजूद, यदि स्त्री को मानवीय गरिमा की आधार भूमि नहीं मिली तो सारे तकनीकी विकास मात्र यान्त्रिक परिवर्तन भर रह जायेगा, निरर्थक होंगे। मुठ्ठी भर क्रीमी लेयर में आने वालों के विकास को समूची स्त्री – जाति के विकास का पैमाना नहीं माना जा सकता

स्त्री भी सृष्टि की वही सचेतन रचना है जो पुरूष है। बस यह बोध जागृत हो जाए। उसके सभी नागरिक अधिकार जाग उठेगे। व्यवहारिक धरातल पर उतरेंगें। स्त्री के हित अच्छे दिन की आमद हो सकती है।